BIBL. DE L'UNIVERSITÉ
OBLONGS
32

THÈSES
ANCIENNES
DU
XVIIE SIÈCLE
1

# THESES ANCIENNES

Exemplaires coupés, sans les gravures.

(270 thèses en 2 v.obl.)

--ooOoo--

| | Discipline: | Soutenue le: | Volume: | N°: |
|---|---|---|---|---|
| ALESME (Jean d')............. | Philosophie | ...Juin 1639 | I | 2 |
| ARNOUX (F.Martial)........... | Théologie | 31 août 1669 | I | 3 |
| ASSELINE (Jean).............. | Philosophie | 6 août 1661 | I | 4 |
| AUBERT (Jean)................ | Philosophie | 18 août 1652 | I | 5 |
| AUBERT (Jean)................ | Théologie | 3 juill.1660 | I | 6 |
| AUGET (Paul)................. | Théologie | 29 janv.1656 | I | 7 |
| AUMONT (Léonard)............. | Philosophie | 28 juil.1658 | I | 8 |
| BACHELIER REMUS(Nicolas)...... | Théologie | 4[févr.]1662 | I | 9 |
| BARIN DE LA GALISSONNIERE (Henri-Louis)............. | Théologie | 26 août 165.. | I | 11 |
| BARRÉ (Charles).............. | Philosophie | 22[juil]1666 | I | 12 |
| BASTONNEAU (Robert).......... | Théologie | [8 févr]1652 | I | 13 |
| BAUDO (Pierre)............... | Théologie | ...mars 1666 | I | 14 |
| BAUDRAND (Henri)............. | Théologie | 28 mai 1664 | I<br>I | 15 ,et<br>15bis. |
| BEAUVEAU LE RIVAU (Pierre-François de)............... | Théologie | 10 juill.1659 | I<br>I | 16 ,et<br>16bis. |
| BEGON (Scipion).............. | Théologie | [6 déc.]1669 | I | 17 |
| BELLOCIER (Charles).......... | Philosophie | 4 août 1668 | I | 18 |
| BERNIER (Charles)............ | Théologie | 24 mai 1662 | I | 19 |
| BERRUYER (Simon)............. | Philosophie | 19 juil.1662 | I | 20 |
| BERTRAND DE LA PÉROUSE(François de).................. | Philosophie | ? | I | 21 |
| BILLET (Nicolas)............. | Théologie | 22 mars 1670 | I | 22 |
| BINARD (Pierre).............. | Théologie | 30 Juil.1669 | I | 23 |
| BLAKE (Fr.Henri)............. | Théologie | [23]fév.1631 | I<br>I | 24 ,et<br>24bis. |
| BLOVET DE CAMILLY(Pierre-François).................... | Théologie | 17 nov.1661 | I | 25 |
| BLOVET DE THAN (Jean)........ | Théologie | 9 août 1652 | I | 26 |
| BOETELLE (Adrien)............ | Thèsesophie | 17 août 1653 | I | 27 |
| BOISCOURION(Anianus de)....... | Philosophie | 14 avr. 1666 | I | 28 |
| BOLLIOUD (Jean).............. | Théologie | 24 mai 1669 | I | 29 |
| BONNET (Jacques-Florent)...... | Philosophie | 5 juill.1665 | I | 30 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| BOUCHER (Joseph)......... | Théologie | [4]janv.1663 | I | 31 |
| BOUCHER (Joseph)......... | Droit canon | 3 décem.1663 | I | 32 |
| BOUCHERON (François)...... | Théologie | 13 janv.1662 | I | 33 |
| BOUILLON (Emmanuel-Théodose de La Tour d'Auvergne, duc d'Albret, C^al de).... | Philosophie | 16 août 1660 | I | 1 |
| BOUQUIN (Robert)......... | Théologie | ...déc. 1664 | I | 34 |
| BOURGEOIS (François)...... | Théologie | 6 févr. 1655 | I | 35 |
| BOURREE DE REVEILLON (Jacques).. | Théologie | 30 avr. 1663 | I | 36 |
| BOVIAC (François)........ | Théologie | 8 octob.1661 | I | 37 |
| BRAGELONGNE (Pierre de)... | Philosophie | 31 juil.1661 | I<br>I | 38 ,et<br>38bis. |
| BRIDIEU LINIERES(Roger-Antoine de) | Théologie | 19 avr. 1655 | I | 39 |
| BRINDEAU (Pierre)........ | Théologie | 15 févr.1656 | I | 40 |
| BRINDEAU (Pierre)........ | Théologie | 24 oct. 1661 | I<br>I | 41 ,et<br>41bis. |
| BRUNO (F.Didier)......... | Philosophie | 13 juil.1670 | I | 42 |
| BURNEL (Guillaume)....... | Théologie | 23 janv.1662 | I | 43 |
| BURTIO (Etienne de)...... | Théologie | ...mars 1662 | I<br>I | 44 ,et<br>44bis. |
| BUTILIER (Edouard)....... | Philosophie | 2 août 1665 | I | 45 |
| CAMUS DE BAIGNOLZ (Carolus) | Théologie | 11 févr.1654 | I | 10 |
| CAMUSAT (Pierre)......... | Théologie | [5 mai] 1649 | I | 46 |
| CAMUSET (Louis-Jean)..... | Philosophie | 16 juil.1662 | I | 47 |
| CAMUSET (Pierre)......... | Philosophie | 13 août 1662 | I | 48 |
| CAMUSET (Pierre)......... | Théologie | 3 juill.1669 | I | 49 |
| CANAYE (Charles)......... | Philosophie | 10 août 1656 | I | 50 |
| CARDONVILLE (F.Charles de) | Théologie | 3 juill.1662 | I | 51 |
| CASTEL (François Perrard) | Philosophie | 25 juin 1668 | I | 52 |
| CATINAT (Clement)........ | Théologie | 3 juill.1663 | I | 53 |
| CAVELIER (Antoine)....... | Philosophie | 6 juill.1659 | I | 54 |
| CAVOYE (Pierre de)....... | Philosophie | 28 juin 1663 | I | 55 |
| CERMOISE (Paul).......... | Théologie | 26 janvi1664 | I | 56 |
| CHAPELLAIN (César)....... | Théologie | 6 févr. 1662 | I | 57 |
| CHARDON (Jean)........... | Philosophie | 24 juil.1670 | I | 58 |
| CHARPANTIER (Nicolas).... | Théologie | 26 juil.1663 | I | 59 |
| CHARTON (Médéris)........ | Philosophie | 17 oct. 1662 | I | 60 |
| CHARTRAIRE (Germain)..... | Théologie | [12]jan.1662 | I | 61 |
| CHEMINEAU DE MARCAYS (François)..... | Philosophie | 10 juil.1661 | I | 62 |
| CHEON (Pontius).......... | Droit canon | 30 août 1658 | I<br>I | 63 ,et<br>63bis. |
| CHESNEL (Louis).......... | Théologie | 27 oct. 1662 | I<br>I | 64 ,et<br>64bis. |
| CHOMEL (Claude).......... | Philosophie | [30]août1654 | I<br>I | 65 ;et<br>65bis. |
| CLEMENT (Claude)......... | Théologie | [27]août1664 | I | 66 |
| CLEMENT (Claude)......... | Théologie | 10 déc. 1665 | I | 67 |
| CLERMONT-TONNERRE DE CRUSY (Antoine-Benoît)....... | Philosophie | 6 août 1662 | I | 68 |

1158445544

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| COLMAN (Daniel)........... | Droit | 20 mars 1666 | I | 69 ,et |
| | | | I | 69bis. |
| COMMINGE (Pierre).......... | Philosophie | 10 juil.1661 | I | 70 |
| COMPAIN (Adrien)........... | Théologie | 4 juill.1669 | I | 71 |
| CONSTABLE (Guillaume-Edmond de). | Philosophie | 13 juil.1669 | I | 72 |
| COTTY (F.François)......... | Philosophie | 13 août 1662 | I | 73 ,et |
| | | | I | 73bis. |
| COUREAU DE PRESSIAT (René).. | Théologie | 31 janv.1662 | I | 74 |
| COURTOT (F.François)....... | Théologie | 21 janv.1662 | I | 75 |
| COUSIN (Nicolas)........... | Théologie | 6 juill.1669 | I | 76 |
| COUSIN (Nicolas)........... | Droit canon | 4 décem.1669 | I | 77 |
| CRAMOISY (Jean)............ | Théologie | 16 juin 1656 | I | 78 |
| DACLIN (Charles-Larent).... | Théologie | 6 août 1669 | I | 79 |
| DALY (Thaddée)............. | Philosophie | 27 juin 1666 | I | 80 |
| DATON (Guillaume).......... | Philosophie | 24 août 1664 | I | 81 |
| DEHAUS (Jacques)........... | Philosophie | 8 septe.1658 | I | 82 |
| DELAMET (Léonard).......... | Théologie | 26 juin 1655 | I | 83 |
| DELATTRE (Alexandre)....... | Théologie | 4 janv. 1653 | I | 84 |
| DELECEY (Gabriel).......... | Théologie | 22 août 1669 | I | 85 |
| DEMORGUES (Joseph-Scipion). | Droit canon | 23 avr. 1665 | I | 86 |
| DEMOUHERS DE LA GRANGE (Jean)... | Philosophie | 6 août 1662 | I | 87 |
| DESCAULES (Louis).......... | Philosophie | 29 juin 1665 | I | 89 ,et |
| | | | I | 89bis. |
| DES HAYS DU FOSSARD (Louis). | Philosophie | 25 juil.1662 | I | 88 ,et |
| | | | I | 88bis. |
| DESPINAY DE SAINCT LUC (Louis). | Philosophie | 29 août 1666 | I | 90 |
| DEVOUGES (Claude).......... | Théologie | [11] fév.1653 | I | 91 |
| DIROYS (François).......... | Droit canon | 12 févr.1665 | I | 92 |
| DROUARD DES MARESTS (François). | Théologie | [11] jan.1662 | I | 93 |
| DROYNET (F.Charles) et GAZON (Simon)............. | Théologie | ..[avr] 1657 | I | 94 |
| DU FOUR (Pierre)........... | Théologie | 26 nov. 1665 | I | 95 |
| DUFOS (Pierre)............. | Philosophie | 20 août 1662 | I | 97 |
| DU MESNIL POTTIER (Charles). | Philosophie | 16 juil.1662 | I | 96 |
| ESCOURAILLE (Francis d')... | Théologie | 6 mars 1662 | I | 98 |
| ESMERY (Pierre)............ | Philosophie | 25 août 1659 | I | 99 |
| FAUVEL (André)............. | Philosophie | 10 août 1652 | I | 100 |
| FERON (Nicolas)............ | Philosophie | 17 juil.1667 | I | 101 |
| FERRARD (Philippe)......... | Théologie | 7 sept. 1669 | I | 102 |
| FOIX (Henri-Charles)....... | Philosophie | 11 sept.1661 | I | 103,et) |
| | | | I | 103bis) |
| | | | I | 103ter) |
| FORCEDEBRAS (Charles)....... | Théologie | 15 mai 1656 | I | 104,et ) |
| | | | I | 104 bis) |
| FOUCQUET (Yvon)............ | Philosophie | 25 juil.1646 | I | 105 |
| GALLYOT (Charles).......... | Théologie | 23 juil.1669 | I | 106 |
| GARNIER (Antoine).......... | Philosophie | 20 juin 1648 | I | 107 |
| GERARD (Isaac-Anselme)..... | Théologie | 30 janv.1664 | I | 108 |
| GIFFORD (Bonaventure)...... | Théologie | 26 janv.1672 | I | 109 |
| GIRARD (F.Sébastien)....... | Théologie | 13 sept.1657 | I | 110 |
| GOBERT (Michel)............ | Philosophie | 21 juil.1667 | I | 111 |
| GODET (Pierre)............. | Philosophie | 25 juil.1660 | I. | 112 ,et |
| | | | I | 112bis. |
| GODET DES MARAIS (Paul de).. | Philosophie | 24 juin 1667 | I | 113 |
| GONDOVIN (Raymond)......... | Physique | 16 août 1654 | I | 114 |
| GORRÉ (Jacques)............ | Philosophie | 9 juill.1656 | I | 115 |
| GOYET DE BECHEREL (François) | Théologie | 4 décem.1657 | I | 116 |
| GROYN (Germain)............ | Théologie | [27] fév.1662 | I | 117 |
| GUENON (François).......... | Théologie | 2 mai 1663 | I | 118 |
| GUERIN (Etienne)........... | Théologie | 17 juil.1654 | I | 119 |
| GUIGNARD (André)........... | Théologie | 14 nov. 1653 | I | 120 |
| GUILOU (François).......... | Théologie | ...janv.1655 | I | 121 |
| GUILLOYRE (Louis).......... | Philosophie | 10 août 1661 | I | 122 |
| GUITONNEAU (Adrien)........ | Philosophie | 19 août 1659 | I | 123 ,et |
| | | | I | 123bis. |
| HACTE (Nicolas)............ | Philosophie | 19 août 1659 | I | 124 |
| HAMEAU (André)............. | Théologie | 15 nov. 1667 | I | 125 |
| HAMON (Jean)............... | Médecine | ....... 1645 | I | 126 |
| HAMON (Jean)............... | Médecine | ....... 1646 | I | 127 ,et |
| | | | I | 127bis. |
| HARLE (Jean-Baptiste)...... | Philosophie | 1er août1661 | I | 128 |
| HEDERMAN (Donat)........... | Philosophie | 7 juin 1664 | I | 129 ,et |
| | | | I | 129bis. |
| HENNEQUIN (François-Louis). | Philosophie | 9 juill.1658 | I | 130 ,et |
| | | | I | 130bis. |
| HOULLIER (Etienne)......... | Philosophie | 22 juil.1661 | I | 131 |
| ILLIERS D'ENTRAGUES (Joseph d').. | Philosophie | 26 juin [.?.] | I | 132 |
| JAPPIN (Jean-François)..... | Droit canon | 19 févr.1661 | I | 133 |
| JAPPIN (Jean-François)..... | Théologie | 16 nov. 1661 | I | 134 |
| JARDE (Pierre)............. | Théologie | 9 juin 1662 | I | 135 |
| JOLLAIN (Jean)............. | Théologie | 15 déc. 1662 | I | 136 |
| JOLY (Melchior)............ | Philosophie | 16 août 1660 | I | 137 |
| JOUVANCOURT (Nicolas)...... | Philosophie | 9 juill.1662 | I | 138 ,et) |
| | | | I | 138bis ) |
| | | | I | 138ter ) |
| JOUVIN (Jacques-François).. | Philosophie | 28 janv.1663 | I | 139 |
| JUIF (François)............ | Théologie) | 28 juin 1644 | I | 140 |
| LABORIE (Jean)............. | Théologie | 23 oct. 1659 | I | 143,et) |
| | | | I | 143bis) |
| | | | I | 143ter) |
| LAFFEMAS (Laurent de)...... | Théologie | ? | I | 144 |
| LA HAYE (Laurent de)....... | Théologie | 24 nov. 1659 | I | 142 |
| LAISNÉ (Jean) ............. | Théologie | 1er juin1669 | I | 145 |
| LAMARTELIERE (François de). | Philosophie | 2 août 1654 | I | 146 ,et |
| | | | I | 146bis. |
| LAMY (Jean)................ | Théologie | 12 mai 1656 | I | 147 |
| LAMY (Jean)................ | Théologie | 5 mai 1658 | I | 148 ,et |
| | | | I | 148bis. |
| LANGAN DE BOISFEVRIER (Robert de)... | Philosophie | 20 juil.1659 | I | 149 |
| L'ANGLE (Nicolas de)....... | Philosophie | 10 août 1663 | I | 141 |
| LANGLE (Robert de)......... | Philosophie | 2 juill.1662 | I | 151 |
| LANGLEE (François)......... | Philosophie | 13 févr.1665 | I | 150 |

*Quis in ſole poſuit tabernaculum ſuum?* Pſalm. 18.

DEVS OPTIMUS MAXIMUS qui lucem inhabitat inacceſſibilem: ejus exiſtentia, ut potè quę nullam ſui realem cauſam agnoſcat à priori, demonſtrari non poteſt, nihilominus tamen (ſolis reclamantibus Atheis) à poſteriori, & per creaturas innoteſcit: Inviſibilia enim Dei per ea quę facta ſunt intellecta conſpiciuntur. Hęc propoſitio, Deus eſt, ſic per ſe nota eſt quoad ſe, ut reſpectu noſtri claram atque perſpicuam negemus. Qui exiſtentiam abſolutam & eſſentiæ divinæ formaliter non modo, ſed etiam per mentem identificatam aſſerit, altitudinem divitiarum Dei utcumque meo judicio penetrat; ipſe in aliorum compoſitionem quę dicitur, ex his, venire non poteſt, in compoſitionem vero quæ dicitur, cum his; nihil vetat ipſum deſcendere. Licet Deum eſſe corpus inſipientis ſit aſtruere atque à fide alienum; acre tamen & vehemens illud Africæ ingenium, Tertullianus ſcilicet in hunc impegiſſe errorem accuſatur à Sancto Auguſtino, ſed piè ac benignè intelligendus eſt. Simplicitas divina quæ compoſitionem omnem realem, ſubjecti & accidentis, materiæ & formę, divinitatis & ſuppoſiti procul à ſe amandat, mentalem & Metaphyſicam generis nempe & differentiæ ut inimicam ſibique infeſtam non dedignatur.

QVI rerum omnium perfectiones ad minus eminenter in ſuo ſinu complectitur, ſimpliciter ſimplices ſibi formaliter retinens, alias verò ſimplices ſeu ſecundum quid ut creaturis proprias ipſis relinquit; Deus cui bonitas per eſſentiam competit, non tantum eſt ſummum bonum, ſed eſſe natura demonſtrat. Nullius mali Moralis author eſt; Phyſici vero & naturalis productionem minimè reſpuit. Infinitas per eſſentiam, ad quam licet in ſe ſit perfectio realis & poſitiva, ſequitur negatio, eidem non adverſatur; de ipſo cum per eſſentiam ſit in omnibus rebus ut cauſa in effectu, juxta Pſalmiſtam exclamantem dicitur; quo ibo à ſpiritu tuo, & quo à facię tua fugiam, ſi aſcendero in cœlum tu illic es, ſi deſcendero in infernum ades? Cujus pręſentiæ ratio formalis, eſt operatio ejus in quo vivimus, movemur, & ſumus excelſiorem cælo ac profundiorem inferno pręſui anguſtia, atque limitatione continere non ſufficit quilibet locus creatus in ipſum ut potè immutabilem tranſmutatio & viciſſitudinis obumbratio cadere non poteſt. Æternitati quæ dicitur interminabilis vitæ tota ſimul & perfecta poſſeſſio, aliqua ſucceſſio non convenit: eandem ille qui eſt principium ſine principio è ſinu ſuo non eliminat, itaut nihil diverſum ab eo in eſſentia potuerit eſſe ab æterno.

DEI qui eſt maxime unus & per excluſionem alterius entis cui divinitas communicari poſſit, intuitivam viſionem abſolutè poſſibilem unà cum Eccleſia defendimus. Ad eliciendum appetitum inefficacem circa illam Dei ut primæ cauſę viſionem ex cognitione horum inferiorum excitari poteſt creatura rationalis; in ſe tamen conſiderata & ſimpliciter divinam ſubſtantiam, prout eſt ſummum bonum ac beatitudo ſupernaturalis quocumque appetitu ſive innato, ſive elicito, ſive efficaci, ſive inefficaci, naturaliter inſpicere non geſtit; hæc eadem viſio indirectè tamen & negativè propter non apparentem repugnantiam evincitur poſſibilis, directè licet & demonſtrativè probari non poſſit. Deum in quem Angeli deſiderant proſpicere ante corporum reſurrectionem animæ omnino purgatæ vident intuitivè, quare millenarius annorum numerus quo juſti cum Chriſto regnaturi ſunt antequam admittantur ad viſionem beatificam meritò ut fictitius rejicitur; in illam opinionem deſcendiſſe Ioannem vigeſimum ſecundum exiſtimant plerique.

DIVINÆ eſſentiæ ſpeciem expreſſam in viſione beatifica, impreſſam vero poſſibilem tantum non actualem admittimus. Quem oculus non vidit ad viſionem ejus intuitivam per potentiam Dei ordinariam pervenire non poteſt, ſibique eſt impar; abſolutè tamen ad id elevari probabiliter ſtatuimus. Beguinas & alios ejuſmodi hæreticos intellectum per ſua naturalia cognoſcere poſſe intuitivè eum quem ſolus filius novit, & cui voluerit filius revelare, admittentes jure ac merito damnat Concilium Vienneſe: creabilem vero qui naturaliter ad tantam perfectionem pertingat & è cujus principiis naturalibus lumen glorię emanet, aut qui natura ſua illud poſtulet minimè arbitramur. Luminis glorię quod dicitur qualitas habitualis inhærens permanenter intellectui beato munus & officium eſt ipſum confortare & cum eo efficienter concurrere ad eliciendam viſionem beatificam; necnon etiam diſponere ipſum ad divinam eſſentiam per modum formæ intelligibilis recipiendam. Hujus luminis activitatem Deum ſupplere poſſe, ſumma illius perfectio non abnuit hacce illuſtratus luce intellectus neceſſario viſionem beatificam elicit.

CVM in domo Patris æterni manſiones multæ ſint & alia ſit claritas ſolis & alia lunæ, beatorum omnium par non eſt conditio, ſed alius alio Deum perfectiùs videt. Iſtius autem inæqualitatis cauſa Moralis ſunt hujus vitæ merita inæqualia; cauſa vero Phyſica eſt lumen gloriæ diſpar non autem intellectuum inæqualitas qui diverſitatem ſpecificam in viſiones intuitivas invehere non poſſunt. Deus ut potè incomprehenſibilis cogitatu, comprehenſivam ſui cognitionem ut ſibi ſoli propriam arrogat eſſentia ſine perſonis & attributis & viciſſim perſonas & attributa ſine eſſentia beati intueri non poſſunt. Volubiles non ſunt apud Deum cogitationes noſtrę reſpectu eorum quę ſunt in ipſo formaliter, ſed conſpiciuntur omnia ſimul. Deum cujus intelligere eſt ſubſtantia quiq; poſuit tenebras latibulum ſuum in hac mortali vita per eſſentiam præter eum de cujus plenitudine omnes accepimus nemo vidit unquam. Omnia ſunt nuda & aperta oculis ejus, nec eſt qui ſe abſcondat à calore ejus, cujus ſcientia, quatenus condiſtincta ab eſſentia & aliis attributis ad res omnes poſſibiles ut earum cauſa dirigens ſe extendit.

PRAXEAM & Patripaſſianos divinarum perſonarum pluralitatem rejicientes, annuentibus Patribus Sanctis & Conciliis à ſocietate & communione fidelium rejiciendos cenſemus: proceſſiones enim duæ ſunt in Deo nec plures nec pauciores, immanentes non tranſeuntes, quarum principium quo & proximum non eſt natura ſecundùm ſe ſumpta quantumvis in ſe ſit fœcunda, ſed intellectus & voluntas. Arium fruſtra reclamantem eſſe coæternum Patri filium, conſubſtantialem, aut ſimilem, jure meritò primùm Synodus ab Alexandro Alexandriæ Epiſcopo coacta damnavit, deinde Concilium Nicænum in quo ejus fautores Epiſcopi ὁμούσιον ſubſcribere coacti ſunt. Verbi proceſſio eſt propriè dicta generatio & diſtincta à proceſſione Spiritus Sancti, quæ ex ſe & eſſentialiter non habet quod tendat ad ſimilitudinem & à qua non poteſt dici genitus divinus ille amor bene vero procedens. Hujus diſparitatis ratio non eſt quod filius accipiat naturam à patre fœcundam neque quod procedat per intellectionem actualem quæ ſit Dei ultima differentia, neque quod vi proceſſionis perſonales Patris characteres repræſentet ſed quia formaliter & vi proceſſionis eſt ſimilis in natura Patri. Spiritum ſanctum Patri & Filio conſubſtantialem eſſe, ejuſque perſonam ab utroque diſtinctam defendunt quotquot ſunt Catholici.

QVATVOR in Deo relationes paternitatem ſcilicet filiationem, ſpirationem activam & paſſivam docet fides catholica: quarum aliquæ diſtinguntur realiter à ſe invicem illæ nimirum quæ relativè opponuntur; aliæ vero quarum nulla eſt oppoſitio relativa virtualiter ſolum tum inter ſe tum ab eſſentia, aliiſque perfectionibus abſolutis diſtinguntur. Relationes illæ non includunt in ſuo conceptu formali eſſentiam divinam nec viciſſim includuntur. In Gilbertum perſonalitates à perſonis diſtinguentem realiter cum Conciliis in quibus ejus cauſa primo fuit agitata ſubinde vero Rhemis terminata merito invehitur Sanctus Bernardus relationes divinas ſecundum rationem pure relativam realiter eſſe perfectiones non vero formaliter & ſecundum naturam; perſonarum ut potè æqualitatem evertentes, haſque non ſibi proprias exiſtentias & relativas vindicantes, ſed per abſolutam divinæ eſſentiæ exiſtentiam exiſtentes liberè admittimus. Nomen perſonæ à Boëtio definitę, quamvis à quibuſdam hæreticis ſuggillatum in divinis ponendum cenſemus illud idem directè relationem naturam verò indirectè & in obliquo ſignificat cum tres perſonas confiteamur, inde quoque eſt quod tres tantum ſubſiſtentias abſolutam rejiciendo piè veneremur.

DE tribus perſonis patre ſcilicet Verbo & Spiritu ſancto. Te trina deïtas fideliter canit Eccleſia. Trinitatem antecedenter ad revelationem divinam ratio naturalis aſſequi non poteſt. De quinque notionibus à Theologis aſſignatis, quibus veluti mediis divinarum perſonarum cognitio adumbratur, licet opinari. Pater cum non ſit ab alio rectè ingenitus, filii principium non vero cauſa aſſeritur. Verbum procedit formaliter ex cognitione omnium creaturarum poſſibilium ſicut & ex cognitione trium perſonarum ex intuitu vero in aliqua temporis dfferentia exiſtentium, ut potè de natura contingentium originem non ducit. Perſonaliter de ipſo imago dicitur. Spiritum ſanctum qui nequaquam à filio diſtingueretur, niſi originis relatio obviaret, religioſè colimus. Licet pater & Filius ſint unum principium Spiritus Sancti à Patre tamen per filium produci non deſinit: eidem hoc nomen, donum, propriè convenit. Nomina eſſentialia ſubſtantiva ſingulariter & non pluraliter de divinis prædicantur. Poſſunt etiam in concreto ſupponere pro perſonis; in abſtracto verò minimè: de deïtate enim quod generet non dicitur.

ACTVS notionales non eſſe de nihilo, bene vero de aliquo, de ſubſtantia ſcilicet divina, reſpectu quorum eſt potentia quæ relationem ſignificet à recta ratione abeſſe non cenſemus. Filius qui non rapinam arbitratus eſt ſe eſſe æqualem Deo, ut imago patris, ſimilitudinem ipſius retinet, in divinis locum habere ęqualitatem religioni conſentaneum eſt. Perſonę ut potè quæ relatę ratione relationum ſunt in ſeſe invicem. Relatorum enim unum relativè eſt in altero, prout in conceptu formali alterius includitur, modus qui vulgo à Theologis circum inceſſio appellatur propter intimam ſui præſentiam perſonis divinis convenit. pater enim in me eſt & ego in patre, Philippe qui videt me videt & patrem inquit Chriſtus. Perſonarum ad nos ſit miſſio modo non ſolum viſibili, ſed etiam inviſibili; quorum ultimus ſit ſecundum ſubſtantiam ipſarum, ſicut & ſecundum donum gratiæ ſanctificantis: etenim ſumus templum Spiritus Sancti & inhabitat in nobis. Cui ad omnes gratiæ ſanctificantis participes mitti convenit inviſibiliter; in ſpecie tamen colombę viſus eſt ille ipſe *qui in ſole poſuit tabernaculum ſuum.*

*Has Theſes, Deo duce, & Præſide S. M. N.* FRANCISCO LOVIS *Sacræ Facultatis Pariſienſis Doctore Theologo, propugnabit* JOANNES LAISNE' *Preſbyter Ebroïcenſis, die Sabbati primâ Junii, anno Domini* 1669. *à prima ad veſperam.*

IN SORBONA.

PRO TENTATIVA.